<?xml version="1.0" ?>			
<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>			
<Doc id="hin-w-media-	H0338©	"	lang="hindi">
<Header type="text">			
<encodingDesc>			
<projectDesc>	CIIL-KHS Hindi Corpora, Monolingual Written Text		</projectDesc>
<samplingDesc>	Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures and tables have been omitted. Samples taken from page 45,46		</samplingDesc>
</encodingDesc>			
<sourceDesc> <biblStruct> <source>			
	<category>	Aesthetics	</category>
	<subcategory>	Literature-Short stories	</subcategory>
	<text>	Book	</text>
	<title>	Charchit Kahaniyan	</title>
	<vol>		</vol>
	<issue>		</issue>
</source>			
<textDes>			
	<type>		</type>
	<headline>	Trade-Aprentix	</headline>
	<author>	Ramesh Chandra Shah	</author>
	<words>	480	</words>
</textDes>			
<imprint>			
	<pubPlace>	India-New Delhi	</pubPlace>
	<publisher>	Jagdish Bhardwaj Prakashan	</publisher>
	<pubDate>	1994	</pubDate>
</imprint>			
<idno type="CIIL code">		74110	</idno>
<index>		H0338©	</index>
</biblStruct> </sourceDesc>			
<profileDesc> <creation>			
	<date>	13-Jul-2005	</date>
	<inputter>	Rajeshwari.R	</inputter>
	<proof>		</proof>
</creation>			
<langUsage>		Hindi	</langUsage>
<wsdUsage>			
<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem>			
</wsdUsage>			
<textClass>			
<channel mode="w">		print	</channel>
<domain type="public">			</domain>
</textClass> </profileDesc> </Header>			

<text><body>		
<p>	बाहर निकल के कमर सीधी कर रहा था कि हैड मिस्त्री ने जोर का एक धौल पीठ पर मारा, “क्यों मुन्नू! टूट गई कमर? इतने ही नाजुक थे, तो अप्रैण्टिसी करने क्यों चले आए बरखुरदार?”	</p>
<p>	मैं अन्दर ही अन्दर जल-भुन गया। पर बाहर से हँस दिया और बोला, “उस्ताद, क्या करें, तकदीर ही ऐसी है। मैं जरा चाय पी आऊँ, बड़ी प्यास लगी है। आपके लिए क्या करें, तकदीर ही ऐसी है। मैं जरा चाय पी आऊँ, बड़ी प्यास लगी है। आपके लिए भी ले आऊँ?”	</p>
<p>	“नही□कोई जरूरत नही□” उस्ताद ने एकदम रूखे स्वर में जवाब दिया।	</p>
<p>	मैं दो कदम ही आगे बढ़ा हूँगा कि दूर इञ्जन की सीटी सुनाई पड़ी। हमारे ‘वैन’ और इञ्जन में □ाई फर्लांग से कम क्या फासला होगा-इञ्जन यहाँ से दीख भी पड़ता था। मैंने लौटकर कहा, “उस्ताह!इञ्जिन सीटी दे रहा है। कही□..”	</p>
<p>	“अरे नही□ वह तो यूँ ही,” उस्ताद ने मेरी बुद्धि पर तरस खाते हुए कहा।	</p>
<p>	“फिर तो जरा आप इञ्जन के पास चले जाते तो बड़ा अच्छा होता।”	</p>
<p>	“अच्छा-अच्छा हो गया, मैं देख लूँगा।” कहकर मिस्त्री धीरे से आगे बढ़ गया।	</p>
<p>	मैं कैण्टीन पहुँचा तो भट्ठी सुलगाई जा रही थी। एक-एक कर दसियों अप्रेण्टिस काम खत्म करके चाय पीने आ पहुँचे। तब जाकर आध घण्टे में चाय बनी।	</p>
<p>	अभी चाय का पहला घूँट लिया ही था कि हमारा साथी खान हाँफता हुआ केण्टीन में घुसा। अरे तुम लोग यहाँ हो?-वहाँ गजब हो गया था अभी...”	</p>
<p>	“क्या हुआ? क्या हुआ?” कहते हुए सब घबराकर उठ खड़े हुए।	</p>
<p>	“अरे यार...अभी एक्सीडेण्ट हो गया था...”	</p>
<p>	“ऐं□” मेरा दिल जोरों से धड़कने लगा-“सुकेन...सुकेन भी अन्दर था...”	</p>
<p>	“हाँ वही तो रह गया था। बाकी तो सब बाहर आ चुके थे। जरा बाल-बाल बच गया। सिर में थोड़ी चोट आई है...कही□एक सेकण्ड की भी देर हो जाती तो...”	</p>
<p>	हम भागे-भागे यार्ड में पहुँचे। देखा नीम तले सुकेन चित पड़ा हुआ है। एक साथी उसके सिर में पट्टी बाँध रहा था। मैंने पास जाकर देखा, खून अभी बहना बन्द नही□हुआ था। पर घाव ज्यादा नही□था। सुकेन का चेहरा एरदम पीला पड़ गया था जैसे अभी तक उस पर मौत की दहशत छाई हुई हो। मुझे देखकर वह हौले से मुस्कराया। मैंने उससे लिपटकर कहा, “मैंने तुमसे कितना कहा सुकेन, तुम नही□ माने। दोनों लगे रहते तो पहले की काम खत्म हो जाता...हे भगवान!□ अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो?”...”	</p>
<p>	तब तक चार्जमैन आ गया। ड्राइवर की पेशी हुई, “मुझे क्या मालूम, ट्रॉली का काम अभी अधूरा ही पड़ा है,” वह बोला, “मुझसे तो लल्लन ने बतलाया था कि ग्यारह बजे से पहले सब हो जाएगा।”	</p>
<p>	“मगर वे तो तुम्हारे पास गए थे खबर देने,” मैंने आश्चर्य से कहा।	</p>
<p>	“कहाँ”, ड्राइवर की आँखें विस्मय से फैल गईं, “अरे भई लल्लन से तो मेरी मुलाकात बस सुबह हुई थी, आठ बजे के वक्त। तब से वे दीखे ही नही□”	</p>
<p>	“बुलाओ उसे, कहाँ है?” चार्जमैन ने आदेश दिया। लल्न का कही□पता न था।	</p>

</body></text>
</Doc>